ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

संजीव जी की आदिवासी केन्द्रित कहानियों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना

डॉ0 मूलचन्द्र पाल

श्री बच्चू राम राम स्वरूप सिंह पी0जी0 कॉलेज, अढ़ौली धाता, फतेहपुर

Received: 21/08/2026

Revised: 12/09/2026

Published: 02/10/2026

E-Mail
drmcpal073@gmail.com

DOI
[xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx]

Copyright
© The Authors. This article is published by Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika.

How to Cite

Pal, M. (2026). संजीव जी की आदिवासी केन्द्रित कहानियों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना. Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika, 1(1), 44-57.

पाल, मूलचन्द्र (2026)। संजीव जी की आदिवासी केन्द्रित कहानियों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना। भारतीय नव शोध अध्ययन पत्रिका, खंड 1, अंक 1, अक्टूबर–दिसंबर 2026, पृ. 44-57।

सारांश/ Abstract

प्रस्तुत शोध-पत्र में संजीव जी की आदिवासी केन्द्रित कहानियों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। संजीव जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से आदिवासी समाज के जीवन, संघर्ष, शोषण तथा सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में पूँजीवादी व्यवस्था, सामंती मानसिकता, भ्रष्ट प्रशासन, पुलिस तंत्र, राजनीतिक स्वार्थ और आर्थिक विषमता के कारण आदिवासियों की दयनीय स्थिति का यथार्थपरक वर्णन मिलता है। इसके साथ ही आदिवासी स्त्रियों के शोषण, गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अंधविश्वास तथा परंपरागत रीति-रिवाजों से जुड़ी समस्याओं को भी उजागर किया गया है। 'तीस' , 'ऑपरेशन जोनाकी' , 'आप यहाँ हैं' , 'भूमिका' , 'महामारी' , 'गुफा का आदमी' , 'जीवन के पार' और 'हिमरेखा' जैसी कहानियाँ आदिवासी जीवन के विविध सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पक्षों को सामने लाती हैं। संजीव जी की रचनाएँ शोषणकारी व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हुए आदिवासी समाज की पीड़ा, असमानता और न्याय की आकांक्षा को अभिव्यक्त करती हैं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ केवल आदिवासी जीवन का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय और विषमता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य भी करती हैं।

मुख्य शब्द : संजीव, आदिवासी समाज, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, शोषण, सामाजिक विषमता, आदिवासी स्त्री

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

1. भूमिका एवं संजीव की कथा-दृष्टि

संजीव जी अपने समय के कथाकारों में एक ऐसे कथाकार हैं। जो आदिवासियों के मौलिक जीवन को अपनी कथा का विषय बनाते है। संजीव जी ने अपनी कहानियों में आदिवासियों के सामाजिक-राजनैतिक जीवन के शोषण पर प्रकाश डालते हैं। इनके लेखन का क्षेत्र अमीर-गरीब, गांव-कस्बा, नगर-महानगर, शोषित दिहाड़ी मजदूर आदि रूपों में दिखाई देता है। इनकी कहानियों में अतीत, भविष्य के साथ आज का भी चित्र खोजा गया है। आदिवासियों के शोषण के सन्दर्भ में संजीव जी अपनी कहानी के पात्रों से विरोधात्मक प्रश्न कराते नजर आतें है। संजीव जी अपनी कहानियों में कथावक्ताओं की तरह दिखाई पड़ते हैं। संजीव जी का परिवार ग्रामीण पृष्ठभूमि से रहा है। इसके कारण वे सदैव गांवों के शोषित-पीड़ित वर्ग की पक्षधरता में दिखाई पड़ते हैं। यह स्वरूप इनकी कहानियों में अनायस ही दिखाई देता है। वे ग्रामीणों की प्रथायें जैसे बंधुआ मजदूर और सामंती व्यक्तियों द्वारा शोषण आदि के चित्र उकेरते हैं क्यों कि वे स्वयं ही इससे भुकत भोगी रह हो चुके हैं।

संजीव जी आदिवासी समाज की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार सारे गैर तत्वों का गहन विवेचन और विश्लेषण अपनी कहानियों में करते दिखाई देते हैं। गहन संवेदना और प्रगतिशीलता के कारण वे शोषण के पुर्ज-पुर्ज खोलते हैं। धर्माधता, जातिवाद और सामाजिक-राजनीतिक गैर बराबरी को वे अपनी मार्क्सवादी वैचारिक प्रतिबद्धता के चलते असंगत बताते हैं। “साहित्य के द्वारा वर्जित क्षेत्र और वर्जित मनुष्य को न्याय देने हेतु संजीव जी कलम चलाते हैं। वर्तमान समय में निजीकरण के नाम पर देश की संपत्ति नीलाम हो रही है। जिसकी कसक संजीव जी की कहानियों में देखी जा सकती है।”[1]

आदिवासी समाज को आदिवासी ही बनाए रखने वाली व्यवस्था पर वे प्रहार करते हैं। तो दूसरी ओर उनकी प्रचलित अंधधारणाओं और अरण्यमुखी संस्कृति की भी खबर लेते हैं जो उनकी बदहाली और आदिम जीवन के लिए जिम्मेदार है। “संजीव जी की कहानियाँ निजी और पारिवारिक न होकर सामाजिक - राजनीतिक हैं। वहाँ उनका समय अपनी विविधताओं में मौजूद है। उनके इस व्यापक कथा संसार में मौजूदा समय और समाज की तमाम सच्चाइयाँ है।”[2]

2. आदिवासी जीवन की सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि

इस प्रकार संजीव जी आदिवासी समाज में फैली भ्रष्ट न्याय व्यवस्था, भ्रष्ट नौकरशाही, राजनीति और पुलिस तंत्र के शोषण की सच्चाई को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

संजीव जी जिन परिस्थितियों में जन्में, पले और साहित्यकार बने उन परिस्थितियों का प्रभाव उनके लेखन पर भी दिखाई देता है। शोषित व पीड़ित आदिवासी समाज उनके लेखन के केन्द्र में है। उनकी कहानियों में आदिवासी जीवन का यथार्थ, उनके रीति-रिवाज और जीवन में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को देखा गया है। ऐसी कहानियों में “आपरेशन जानाकी', 'टीस', 'घर को चलो दुलारीबाई', आप यहाँ हैं', 'भूमिका', “जीवन के पार', “दुनिया की सबसे हसीन औरत',

'महामारी', 'लिटरेचर', "गुफा का आदमी' और 'हिमरेखा' आदि प्रमुख हैं। संजीव जी ने इस कहानियों में आदिवासी समाज की तमाम समस्याओं को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है।

संजीव जी की कहानियों में संथाल, थारू आदि जनजातियों का वर्णन आया है, जिनका क्रमशः पूंजीपति, ठेकेदार, अफसर, पुलिस और गुंडों आदि द्वारा शोषण किया गया है।

2.1 'टीस' कहानी में पूँजीवादी और सामंती शोषण

"'टीस' कहानी में पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा प्रताड़ित संथधाल आदिवासियों के शोषण एवं उत्पीड़न को दर्शाया गया है। संथाल आदिवासी अपने पुरखों से पत्थर हटा-हटाकर पहाड़ खोदकर जमीन निकाल रहे हैं पर आज इन्हीं मूल निवासियों को पूंजीवादी व्यवस्था विस्थापित कर रही है। व्यर्थ के पेड़-पौधों के समान इन्हें कांकड़ डीहा गांव से हटाया जा रहा है। कोलियारी का पूंजीपति कांकड़डीहा गांव में अपनी सुविधा और मुनाफे के लिए खुली खदान शुरू करता है जिसमें सारे संथाल आदिवासियों के खेत समाते जा रहे हैं। कुछ संथाल आदिवासी मजदूर बनकर वहीं ठेकेदारी में खटने लगे कहानी में - "धीरे-धीरे संथालों-सपेरों की वह बस्ती जंगली फूल की तरह कुम्हलाने लगी थी। कांकड़डीहा कॉलयरी के मालिक ने बस्ती के पास ही सुविधा और मुनाफे को ध्यान में रखते हुए एक खुली खदान शुरू कर दी थी जो बस्ती की छाती पर एक बड़े घाव की तरह दिन-दिन गहरी और बड़ी होती गई थी और जिसकी निकाली गई मिट्टी और पत्थरों के दूह के जबड़े में संथालों के खेत समाते चले गए थे। कुछ तो इसे अपनी नियति मानकर "चासा' से मजदूर बनकर वहीं ठेकेदारी में खटने लगे थे। लेकिन अधिकांश को यह जिंदगी रास नहीं आई थी और वे गिद्धनुमा अधिकारियों और क्लर्कों के चुंगल से मुआवजे की आधी-अधूरी रकम लेकर धनबाद, रांची या पुरुलिया की ओर ढोर-डांगर, डेरा-झण्डा लेकर चल पड़े थे।"[3] कहने का आशय है कि कहानी में शोषकों को सांपों के रूप में आंका गया है तो आदिवासियों के दयनीय जीवन के लिए उन्हें स्वयं जिम्मेदार माना गया हैं। शोषक सांपों के रूप में तो संथाल मछली और मेढक बनकर उनका चारा बने हैं। संथाल जड़ी बूटी बेचकर, कंदमूल खाकर या सांप बेचकर जीवन को जी रहे हैं। सपेरे का काम इनका शौक नहीं बल्कि मजबूरी है। शिबू काका का बाप भी सांप पकड़ते-पकड़ते मरा था। अपनी वेदना का बयान करते हुए शिबू काका आदिवासी और अभिजात्य के जीवन स्तर को दर्शाते हैं। कथावाचक जब सपेरे के काम को अच्छा कहता है तब शिबू काका कहते हैं- "आइसा छोटा बात काहे को बोलता भाइयो ... आप लोग मैनेजर बनेगा, मिनिस्टर बनेगा, ई धंधा हम गांइया-गंवार को छोड़ दो। सपेरा लोग का जीवन सांप कामडाने सेइ जाता। हमारा बाप भी अइसेइ मरा था। मरते बखत हमको ऊ बोल के गिया- बेटा, ई धंधा छोड़ के चासवास शुरू करना। हम किया भी। गाछ काट-काट के पत्थर हटा-हटा के खेत बनाया | मगर भाग्गो में येई लिखा था[4] इस प्रकार सामंती व्यवस्था आदिवासियों को प्रताड़ित कर रही है। गांव की अधिकतर संपत्ति इन्हीं के कब्जे में है फिर भी वे आदिवासियों की जमीन छीनने पर उतारू हैं। इस प्रकार समाज की समाजिक-राजनीतिक व्यवस्था भी इनके शोषण का समर्थन करती है।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

2.2 'ऑपरेशन जोनाकी' में शोषक व्यवस्था

"ऑपरेशन जोनाकी' कहानी में असली शोषकों को बेनकाब किया गया है। जोनाकी गांव की अस्सी प्रतिशत संपदा जमींदार, महाजन, सूदखोर, पटवारी आदि के हिस्से में है। बीस प्रतिशत संपदा जो आदिवासियों के पास है उन्हें भी समाज के शोषक लोग हथियाना चाहते हैं। आदिवासी जब अपने पेड़ स्वयं काटने लगे, तालाबों की मछलियाँ स्वयं बेचने लगे, स्वयं फसलें काटने लगे, इसे शोषक आतंक मानते हैं। वास्तव में शोषकों के पास गांव की दस लाइसेंसशुदा और बीस अवैध बंदूकें हैं। शोषक आदिवासियों पर स्वयं अन्याय-अत्याचार करते हैं और आदिवासी जब स्वयं की संपत्ति का अधिग्रहण करते हैं तो जोनाकी गांव में शोषकों की रक्षा के लिए अर्धसैनिक बल को बुलाया जाता है। अनिमेश दा सामंती व्यवस्था की सच्चाई बयान करते हैं-- "ये वन विभाग के कुछ भ्रष्टकर्मी और कुछ वैसे ही भ्रष्ट महाजन, अफसर, जोतदार और इनके गुर्गे यही हैं न आपके शांति प्रिय प्रतिष्ठित नागरिक ...? आखिर ये त्रस्त क्यों हैं? उन भूमिहीन चासा और आदिवासियों से? गांव की दस लाइसेंसशुदा और बीस अवैध बगीचे भी इन्हीं के हैं। गांव में जब भी कोई मारा पीटा गया तो वह उस दूसरे भूमिह्ीन तबके का रहा बलात्कार भी हुए तो उन्हीं पर।"[5]

कहने का आशय का है कि आदिवासियों को धर्म का हवाला देकर प्रताड़ित किया जाता है। एक तो वे अज्ञान और अभाव के शिकार हैं, ऊपर से पूजारी इन्हें प्रताड़ित करते हुए आदिवासी नारियों का यौन शोषण करते हैं।

2.3 धार्मिक पाखंड, पुलिस और न्याय-व्यवस्था

'टीस" कहानी में कांकड़डीहा गांव के संथाल आदिवासियों को पंचानन भट्टाचार्य के शोषण का शिकार बनना पड़ता है। पंचानन भट्टाचार्य सांप से भी विषैला है, अगर सांप उसे डसे तो सांप ही मर जाए। शिबू काका उसकी विशेषताओं को अभिव्यक्त करते हैं-"मंदिर का पुजारी पंचानन भट्टाचार्य जब वे त्रिपुंड लगा के पूजा के लिए आया जनाना लोग को घूरता तो लगता कि गोखूर छाप वाला नाग फन फुला के घूर रहा है। मंतर किटकिटाते बखत हम आदिवासी लोगों को देखेगा तो फुफकारेगा भागो साला लोग जाके खीस्तान बन जाओ। इहां काहें आता! साब, देख लेना उसको अगर सांप कामड़ाया तो सांपइ मर जाएगा, वो नहीं मरेगा।"[6]

शिबू काका कोलकाता में सांप का सौदा करने जाते हैं। सात दिन बाद जब वे रात के दो बजे घर आते हैं तो देखते हैं कि मताई का यौन शोषण पंचानन भट्टाचार्य कर रहा है। उन्होंने उसी वक्त मताई की हत्या की पर पुजारी पर किया वार खाली गया। दीया फूंककर अंधेरे का फायदा उठाकर वह भागा। जब पुजारी का पीछा किया तो मंदिर के दरवाजे बंद करके शोर मचाना प्रारम्भ किया। गांव वालों ने शिबू काका को पकड़कर पेड़ से बांधा और पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने आदिवासियों पर अन्याय ही किया है। "पुलिस सत्ता और व्यवस्था के सामने अक्सर झुकती है। आदिवासियों के पास सत्ता है और न ही शक्ति अगर होती भी है तो उसके चालक अन्य कोई होते हैं। ऐसी अवस्था में आदिवासियों को पुलिस के अन्याय का शिकार बनना पड़ता है।"[7]

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

'टीस' कहानी में मताई के साथ व्याभिचार करने वाले पंचानन भट्ट्टाचार्य को पुलिस सजा नहीं दे सकी और मताई की हत्या करने वाले शिबू काका को उम्रकैद की सजा सुनाई जाती है। इस समय अन्याय के खिलाफ शिबू काका पुलिस की अव्यवस्था का पर्दाफाश करते हैं-"हमको तो आप जेल दे दिया, ठीक किया, मगर आप हमारा माफिक उसको जेल दे न सकेगा।"[8]

कानूनी फंदा केवल गरीबों के लिए बना है। आजीवन कारावास भुगतते समय शिबू काका एक दिन जेल की दीवार फांदते वक्त प्रहही की ललकार पर गिरकर हाथ-पैर तुड़वा देते है। साथ ही मानसिक संतुलन भी गवा बैठते हैं। कानून के हाथ कितने भी लंबे क्यों न हों, वे पुजारी पंचानन भट्टाचार्य के गिरेबान तक नहीं पहुच सकते |

3. गरीबी, भूखमरी और अंधविश्वास

संजीव जी की 'महामारी' कहानी गांव की गरीबी, भूखमरी और बीमारी की मार्मिक गाथा है, जिसके नेपथ्य में पार्श्व संगीत की भांति श्मशानी सन्नाटे की करुण टेर सुनाई देती है। कथावाचक वैशाख में अपने गांव नहीं जाना चाहता है। चिलचिलाता गर्दीला प्रांतर, धूल में नहाई माटी की मूरतें, गरीबी में लिथिड़ी भिनभिनाती सूरतें, देवी माई के प्रकोप के नाम पर चेचक की बीमारी, देवी को खुश करने के लिए पूजा-अर्चना, नीम का चंवर और बच्चों को छोहरियाँ खिलाने की प्रथा, गांव का यह यथार्थ उसे काट खाने को दौड़ता है फिर भी गांव उसे खींच ले जाता है। गांव पहुँचने पर कथावाचक को पता चलता है कि रंगई बहू देवी माता का कोप भाजन बन चुकी है। गांव में जैसी विषम जीवन स्थिति है, उसमें किसी का जिंदा रहना ही आश्चर्यजनक है उनका महामारी के चपेट में आ जाना या गरीबी से उबरने के असफल प्रयास में अंधविश्वासी हो जाना कतई आश्चर्यजनक नहीं लगता। जहाँ भोजन के ही लाले पड़े हों वहाँ औषधि, उपचार और शिक्षा की बातें सोचना बेमानी है। ऐसे में अपने रोग और दुःख से निजात पाने के लिए झाड़-फूक और टोना-टोटका के अलावा उपाय क्या बचता है।*[9]

महामारी के दिनों में पंड़ितों की बन आती है। अपने गांव की दरिद्रता के बारे में कथावाचक कहता है-"मुझे याद नहीं कि दो-चार सम्पन्न गृहस्थों को छोड़कर किसी के यहाँ भी दो जून भोजन बनता हो आम हमारा सबसे बड़ा बनता। ... सब्जी में यदि आलू को छोड़ दें, जिस पर हम तीन महीने गुजारा करते, तो सब्जी खाना हमारे लिए विलासिता थी। तेल के खर्च को देखते हुए महंगू काका को बुलवाकर हमसे अधिकांश मुंडन करवा लिया करते |"[10]

"'चितकबरी मक्के की सूखी रोटी के टूकड़े और बसाती बासी दाल लिए बैठी थी नंग धडंग बच्चों की टोली।"" उनके बीच एक छह साल की बच्ची, रंगई बहू की[11]

सटकारती आवाज को सुनकर जल्दी-जल्दी रोटी के चीमड़ टुकड़े को निगलने के लिए बसाती दाल गटक जाती है, लेकिन दूसरे ही क्षण उल्टी कर देती है। रंगई बहू उसे पीटती हुई रुआआँसी होकर कहती है-"अभी से रट लगायेगी भूख-भूख तो क्या लाकर दूँगी? बाप का कलेजा या अपना!" भय कतार बच्ची उल्टी को काछ-काछकर कटोरे में रखने लगती हैं उसे फिर से खाने के लिए। गरीबी के इस विद्रूपतम चेहरे को देखकर मन जुगुप्सा से भर उठता है। देश की प्रगति का

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

दंभ भरने वालों के समक्ष यह गरीबी, जो किसी भी महामारी से ज्यादा मारक है, एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है। निष्कर्षत: कहना सही होगा की आदिवासियों का जीवन आर्थिक अभाव में गरीबी तथा भूखमरी से जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है।[12]

आदिवासियों का शोषण मुख्यतः भ्रष्ट नौकरपेशा द्वारा हो रहा है। आदिवासियों को अक्सर शोषित करते हैं। आदिवासी अनपढ़ गंवार होने के कारण इन्हें कानून-कायदों का ज्ञान नहीं होता। परिणाम स्वरूप उन्हें भ्रष्ट नौकरपेशा प्रताड़ित करते हैं। उनको अधिक से अधिक काम के बदले कम से कम मेहनताना दिया जाता है। इनका हर तरह से शोषण किया जा रहा है। आधुनिक सभ्य समाज में यह निरीह जीव अभिशप्त जिंदगी जी रहे हैं।

4. आदिवासी स्त्री का शोषण

"<दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी ट्रेन में सब्जी बेचने वाली उरॉव जनजाति की नारी के शोषण को अभिव्यक्त करती है। टिकट निकालकर वह औरत रेलगाड़ी में नीचे बैठी है। टी.टी. साहिबा भी एक औरत है जो टिकट निकालने के कारण उस औरत पर खीजती है। मूलियों के अलग से दस रूपए ऐंठना चाहती है। जबकि मूलियों पर मुनाफा भी उतना नहीं मिलता है। इसी समय रेल पुलिस डिब्बे में चढ़कर कुछ मूलियाँ उठा लेती है। बगैर टिकट पांच-पांच का नोट देकर दो शरीफजादियाँ डिब्बे में चढ़ती है। टी.टी. साहिबा सूदखोर महाजन की तरह अभी भी तकाजे किए और धमकियाँ दे रही हैं। टी.टी. साहिबा मुफ्त की सब्जियाँ चाहती हैं जब नहीं मिलती तो खौलती है। मूलियाँ शरीफजादियों के कपड़े पर गिरने से वे उस आदिवासी औरत को बाजारू कहती हैं। मुगलों को तीन बार शिकस्त देने वाली उरॉव जनजाति की नारी आज भ्रष्ट नौकरपेशा से प्रताड़ित है।

मूलियों के दस रूपये किराया देने से उरॉव नारी असमर्थ है तब वह दया की याचना करत है, तो टी.टी. साहिबा कहती हैं- "दया? उन्होंने नाटकीय चौंकाते अंदाज में बता को दुहराया "ऐसी दया करते फिरें तो हम खाएंगे क्या - आं कहकर वे, बड़ी मास्टरनियाँ और रेलवे पुलिस के जवान भी हंस पड़े जैसे एक भीगी गोरैया को घेरकर काली भूरी बिल्लियाँ और पीले कुत्ते पूंछ ऐंठ रहे हो। जैसे उनकी बोर जिंदगी में एक विनोद का क्षण आ गया हो।""[13]

इन्हें हर समय रौब से दबाया जाता है और उनमें मुफ्त में वस्तुएँ ली जाती है। टी. टी. साहिबा का रौब तो देखिए जो धौंस के साथ मुफ्त में सब्जियाँ लेना चाहती हैं। "देखो, हमारी गाड़ी में चढ़ो तो अच्छी सब्जियाँ लेकर वरना, दूसरी गाड़ी देखो, समझी?" इस समय भीगीलाल मुनियाँ के समान डर और असहायता के बगैर उसके पास अन्य कोई चारा नहीं है।[14]

4.1 'आप यहाँ हैं' कहानी में स्त्री-शोषण

आप यहाँ हैं! कहानी में आदिवासी औरत हिंदिया सरकारी अधिकारी वर्मा साहब के घर में नौकरानी का काम करती है। हिंदिया घर में कमरों की सफाई कर रही थी उस समय मिसेज वर्मा घर में नहीं थी तभी हिंदिया कांच की धुंधली खिड़की साफ कर रही होती है तभी पीछे से वर्मा साहब उसे जबर्दस्ती पकड़ लेते हैं। लेखक लिखते हैं- "नहीं बाबू, नहीं बाबू! ...

हाथ-पांव उसी मूर्च्छना में छटपटाये ... कांच की दीवार के पार हाथ उ-उठकर टूट रहे थे ... वर्मा साहब के पंजों की खंरोच को झेलते हुए किसी तरह कपाट खोलकर अस्त-व्यस्त बाहर आ गयी हिंदिया।"[15]

4.2 'घर को चलो दुलारी बाई' में सामंती अन्याय

घर को चलो दुलारी बाई' कहानी सामंती समाज के चंगुल में फंसी औरत के शोषण की करुण गाथा है, जो हमारी सामाजिक - राजनीतिक संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय की निष्पक्षता एवं न्याय मंदिर की पवित्रता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। कहानी में सवर्ण सामंती समाज और व्यवस्था से प्रताड़ित नारी का चित्रण है। दुलारी के विधवा होते ही मायके और ससुराल की संपत्ति से उसे बेदखल किया जाता है। उसे पुत्र को जहर पिलाकर मारा जाता है और उसे जीते जी मृत घोषित किया जाता है। गांव का प्रधान सरपंच, ग्राम सेवक, बी.डी.ओ. घाट के डोम से लेकर जेठ, देवर, सास तक ने दुलारी को जीते जी मृत घोषित करनेके लिए गवाही दी। गंगाजल और गीता की कसम खाकर झूठ बोला गया। हलवाहे खिम्मू सेबात करने मात्र से पति दुलारी को पीटता है। गांव और परिवार वाले इनके संबंधों के लेकर शंका करते है।। घर की सास, जेठानी और देवरानी भी दुलारी के खिलाफ हो जाती है। "ससुर, जेठ और देवर भी भूखी नजरों से देखते हैं। अंधेरे का फायदा उठाकर पटवारी के हाथ उसकी छाती पर आ पड़े थे। बी.डी. ओ. भी दुष्ट नजरों से देखता है। मायके और ससुराल वाले भी बाइज्जत बरी हो गए थे छह सालों तक मजदूरी करके मुकदमा चलाया गया। सारे गवाह धमकाएँ या खरीदे गये।[16]

दुलारी बाई को गुमान था वह मुस्ताक अहमद भी जज बनने के बाद भ्रष्ट हो गया। रिश्तेदार, भ्रष्ट व्यवस्था तथा न्याय पालिका में सांठ-गांठ हो गई थी। परिणाम स्वरूप असहाय दुलारी बाई को न्याय दुर्लभ हो गया था। अदालत में भी सभी उसे पहचानने से इंकार करते हैं। तब कथावाचक कहते हैं-"तुम मर गई इनके लिए या ये मर गए तुम्हारे लिए ...?"" जब अपने मर जाते हैं तब आदिवासी उसे पनाह देते हैं और अपनाते हैं विधवा असहाय नारी की वेदना को कहानी अभिव्यक्त करती है।[17]

4.3 प्रशासनिक भ्रष्टाचार और आदिवासी अधिकार

"ऑपरेशन जोनाकी' कहानी में भ्रष्ट व्यवस्था को कठटघरे में खड़ा किया गया है। सरकार द्वारा तय मजदूरी मांगने पर आदिवासियों पर जुल्म ढाए जाते हैं। कानून का आधार लेकर इन्हीं की संपत्ति लूटी जाती है। इस जुल्म के समय अधिकारी अनभिज्ञता का ढोंग करते हैं। इन्हीं के गुंडे, इन्हीं के पास लायसेन्सशुदा और अवैध तीस बंदूकें हैं।

अनिमेष दा का बेटा सौरभ ईमानदार कांग्रेसी कार्यकर्ता मजूमदार बाबू के हत्यारे मंत्री के गुंडे को पहचान लेता है तो उसे किडनैप किया जाता है। चिन्मय को देशद्रोही और सत्येन्द्र के पीछे पुलिस लगाई जाती है। तब आत्मपीड़ा और असहायता को अनिमेश दा बयान करते हैं-"लड़के बहादुर थे, अपनी राह चल दिए। मैं सिर्फ उनकी यादों को भुलाने तबादले लेता रहा, अपराधियों को पकड़-पकड़कर पीटता रहा, लेकिन यह सब छलावा है, असली अपराधियों तक ये मेरे

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

बौने और बूढ़े हाथ कहाँ पहुँच पाए? अपने ही बहादुर पुत्रों की रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ रहा तो मैं और किसकी रक्षा का दम भरता। फिर रहा हूँ यहाँ से वहाँ देश के सच्चे प्रहरी तो वही थे, फिर मेरा रास्ता उनके आड़े क्यों आता है?"[18]

आदिवासियों की बदहाली के लिए गैर आदिवासी अधिक जिम्मेदार है। सरकार आदिवासियों के विकास के लिए आंखें मूंदकर पैसा खर्च कर रही है। पर उसे अफसर ही हजम करते हैं। रोजी-रोटी की व्यवस्था के लिए पंद्रह बीस मील का अंतर रोज पारकर उन्हें शहर आना पड़ता है। शहर में किसी साहब के घर काम करना पड़ता है या लकड़ी आदि बेचनी पड़ती है।

4.4 'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासी जीवन

आप यहाँ है" कहानी आदिवासी शोषण को दर्शाती है। बाहर से आए लोग आदिवासियों के साथ '"नेटिव गुलाम" के समान व्यवहार करते हैं। आदिवासी विकास की सारी योजनाएँ और घोषणाएँ व्यर्थ हैं। जंगली जानवरों के समान आदिवासी सुख-सुविधाओं के अभाव में आदिम जीवन जी रहे हैं। हिंदिया आदिवासी नारी पंद्रह-बीस किमी दूर से वर्मा के घर काम करने भोर की गाड़ी से आती है और शाम की गाड़ी से वापस जाती है। वर्मा के घर से स्टेशन और स्टेशन से घर तक आधे-आधे घंटे का पैदल सफर उसे करना पड़ता है। इस समय पेट या पीठ में बच्चा भी बंधा होता है। पति गायब है मां मर चुकी है, बूढ़े बाप के साथ आठ-नौ साल के दो भाई-बहन हैं। हिंदिया स्वयं के बेटे को पढ़ाना चाहती है पर जानलेवा अभाव और दुर्गम स्थान के कारण यह संभव नहीं हो सकता। शून्य के नीचे तापमान में ये नंग-धडंग जी रहे हैं। इनके हिस्से का पैसा हजम करके इन्हें ही शक की नजर से देखा जाता है। हिंदिया पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाया जाता है उसे खोजने वर्मा अपने परिवार के साथ जाता है तब हिंदिया कहती है-"आ गया आप यहाँ भी, कुत्ता का माफिक सूंघते-सूंघते। मालूम नै है आपको क्या कर सकता ई लोग? हमारा वास्ते सरकार बहुत पैसा देता न! ऊ सब कहाँ जाता? उलटे हमी लोग चोर है? कौन चोर है? किसका कौन चोरी करता सबका हिसाब देना होगा। देखो, देखो हम लोग को देखो-कैसा माफिक जीता है हम लोग और कैसा फूटानी से रहता आप लोग ।""[19]

अभिजात्य वर्ग द्वारा शाल और महुआ के खोंढराये को काटकर सागवान और युक्लिप्टस को स्थापित किया जा रहा है। वर्मा के बच्चे हिंदिया के बच्चे को कंगारू का बच्चा समझकर उसके साथ कुत्ते और बिल्ली के बच्चे के समान खेलते हैं। भारत के सीमावर्ती नेपाल की पहाड़ी अंचल में बसा यह आदिवासी गांव जीवन मृत्यु में पिसता नजर आता है। हिंदिया अन्याय अत्याचार से प्रताड़ित होकर जब भाग जाती है तो वर्मा की पत्नी कपड़े, बर्तन और राशन चुराने का इल्जाम लगाती है और हिंदिया को खोजते हुए आती है, तब हिंदिया का पिता घर का सामान उनके सामने फेंकता है और पहने हुए कपड़े तक उतारता है-"पहचान लो अपना सामान! अंत में उसने अपने बदन का पैंट खोला और उनके सामने फेंक दिया और चाहे न भी हो, ई पैंट तुम्हारा है।""[20]

हिंदिया का यौन शोषण उसका मालिक अफसर वर्मा करता है, जिसके डर से वह अपने इलाके में काम छोड़कर भाग जाती है। पति यौन शोषण करता है तो पत्नी चोरी का झूठा इल्जाम लगाती है। कांच की खिड़की साफ करते समय वर्मा

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

आत्मीयता के लिजलिजे अंदाज में कुछ कह रहे थे। वह कसमसाई अवाज में कहने लगी-"नहीं बाबू, नहीं बाबू! हाथ-पांव उसी मूर्च्छना में छटपटाए, आंख बाहर चिपकी रही। कांच की दीवार के पार हाथ उठ-उठकर टूट रहे थे। ... वर्मा साहब के पंजों की खरोंच को झेलते हुए किसी तरह कपाट खोलकर अस्त-व्यस्त बाहर आ गई हिंदिया | आदिवासी विकास की डींगे हांकने वाला अफसर स्वयं हिंदिया के साथ बलात्कार करता है। अफसर लोग आदिवासी नारी की विवशता का फायदा उठाकर उनका शोषण करते हैं।[21]

5. भ्रष्ट राजनीति और आदिवासी समाज

भ्रष्ट राजनीति के कारण आदिवासी समाज केवल वोट बैंक तक सीनित रह गया है। मजदूर आंदोलनों का फायदा केवल चुनाव जीतने के लिए किया जा रहा है। किसी की अगर मृत्यु होती है तो मरने वाले व्यक्ति के साथ इनका कोई लगाव कोई लगाव नहीं है। केवल अपना महात्मा रूप लोगों के सामने दर्शाने के लिए वे घोषणाएँ करते हैं। घोषणाओं के द्वारा आदिवासी समाज को गुमराह किया जाता है।

'भूमिका' कहानी में भारतीय राजनीति के बर्बरता का चित्रण किया गया है। आदिवासी समाज की बस्ती खाली करने हेतु गुंडों के द्वारा उनकी बस्ती में आग लगाई जाती है। फिर आग लगाने वाला सेठ ही धर्मात्मा बनकर मुआवजा बांटता है। यही गुंडे जब चकलाघर में अय्याशी करने पहुचते हैं तो पाते हैं कि कल की आग में झुलसी नारी उनके सामने है जो आदिवासियों के बीच काम करने आई थी। आग में एक बच्चे को बचाते समय जलता हुआ छप्पर गिर जाने से बच्चा तो दबकर मर गया साथ ही उसकी आंख भी चली गई । जिस जानी के बच्चे को वह पढ़ाने आती थी। उसी जानी ने उसके अंधेपन का फायदा उठाकर उसे चकलाघर पहुचाया था। मुरमू जानी सेठ, राजनेता, गुंडे आदि को औरतें सप्लाई करता है। आदिवासी औरतों को बहला फुसलाकर चकलाघर चलाए जाते हैं एक समाज सेविका को भी चकलाघर में बेचा जाता है-"आदिवासियों के बीच काम करने आई थी। जानी के बच्चों को भी पढ़ा रही थी और उसी जानी ने इसके घायल होने, अंधेपन का फायदा उठाकर सड़ते हुए माल की तरह हम सबों के पास बेचा ।/" आदिवासी नारियों को लालच दिखाकर या उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर उनका यौन शोषण किया जा रहा है। आदिवासियों की उन्नति करने आई समाज सेविका को भी चकलाघर पहुचाने की व्यवस्था सेठ और उनके गुर्गे करते हैं। भ्रष्ट राजनीति करने वाले राजनेताओं को आदिवासियों की समस्याओं से कोई सरोकर नहीं है। उनके द्वारा निरन्तर किये जा रहे शोषण से आदिवासी समाज में विषमता व्याप्त हो गई है।[22]

6. नक्सलबाड़ी आंदोलन और व्यवस्था-विरोध

"ऑपरेशन जोनाकी' अपराध, शिनाख्त, अवसाद, तिरबेनी का तड़बन्ना आदि नक्सलबाड़ी आंदोलन से संबंधित कहानियाँ हैं, जो बाद में संजीव जी के विविध कथा संग्रह में संकलित हैं। ये कहानियाँ इस धारणा को ध्वस्त करती हैं कि नक्सली अपराधी होते हैं। इन कहानियों के द्वारा संजीव जी ने असली अपराधी के दागदार चेहरे को बेनकाब कर उसे कटपघरे में खड़ा कर दिया है।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

आपरेशन जोनाकी कहानी में अनिमेष दा की पत्नी चिन्मय की मौत के सदमे को झेल नहीं पाती है और पागल होकर मर जाती है। इसके उपरान्त फिर अनिमेष दा को 'सत्येन' के विरूद्ध आपरेशन करने का दायित्व दिया जाता है। जिस पर आदिवासी किसानों को बहकाने का आरोप है। अनिमेष दा अब तक असली अपराधी के चेहरे को पहचान चुके हैं इसलिए वे अपने अफसर से कहते हैं-"आखिर पुलिस अफसर भी तो देश का नागरिक होता है और नागरिक होने के नाते यह सवाल करने का हक तो मुझे भी है कि यह तत्परता उस समय क्यों नहीं दिखाई गई, जब सरकार की तयशुदा मजदूरी मांगने पर उन्हें पीटा जा रहा था, जब नये-नये एक्टो की आड़ लेकर ठेकेदारों के खरीदे हुए वन विभाग इनके परम्परागत जीने के अधिकार इनके जंगलों से इन्हें वंचित कर रहे थे, जब इनकी अर्जियों पर अधिकारी कान में तेल डाले पड़े थे।/"[23]

कहानी में चिन्मय के प्रश्न में एक ओर व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश है तो दूसरी ओर समकालीन यथार्थ भी अन्तर्निहित है-"जब गरीब किसानों, भूमिहीनों पर महाजन, सूदखोर, जोतदार और जमींदार हिंसा करते हैं, तब आपका आदर्श कहाँ रहता है? आपकी पक्षधरता किससे संचालित होती है? ... संगठित हिंसा तो दुनिया की हर सरकार करती है। जनता से जो स्वयं राष्ट्र की एक घटक है, हर सरकार यह अपेक्षा रखती है कि वह उसके प्रति वफादार रहे जो अपनी वफादारी प्रमाणित नहीं कर पाते उन्हें कुचल देती है।""[24]

आदिवासी नकक्सलबाड़ी आंदोलन से प्रभावित रहे हैं। संजीव जी की कहानी आपरेशन जोनाकी में नक्सलवाद का चित्रण मिलता है।

7. आदिवासी संस्कृति, परंपराएँ और लोकविश्वास

संजीव जी की कहानियों में आदिवासी अपनी आदिम जीवन पद्धति के कारण अधिक प्रताड़ित है। अरण्यमुखी संस्कृति इनके दुख-दर्द के लिए जिम्मेदार है। वे इसी संस्कृति से चिपके रहना चाहते हैं। परिणामस्वरूप आज भी वे अविकसित और बर्बर जीवन जी रहे हैं। कुछ असंगत वैवाहिक संबंध आज भी वे मानते हैं जो इनके जंगली होने का सबूत है। संजीव जी की कहानियाँ आदिवासी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं यथा रीति-रिवाज, प्रथाएँ, रहन-सहन, लोकगीत आदि जो अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं उनसे हमारा परिचय करवाती है।

7.1 'गुफा का आदमी' में आदिवासी परंपराएँ

"गुफा का आदमी' कहानी में बोंडा आदिवासियों की बेमेल विवाह प्रथा का वर्णन किया गया है। प्राचीन परम्पराओं का आदिवासी लोग आज भी आंखे मूंदकर पालन करते हैं। भयंकर गरीबी के चलते बालों को तेल तक नहीं मिलता इसलिए बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक औरतों का मुंडन किया जाता है। यहाँ तेल की किल्लत की अपेक्षा परंपरा अधिक महत्व रखती है। बोंडा आदिवासियों में विवाह पूर्व देह संबंधों को स्वीकृति दी जाती है। केवल गांव को भोज खिलाना पड़ता है। सोमा और तैय्यबचा में अनैतिक प्रेम संबंध है। सोलह वर्ष की सोमा का विवाह आठ वर्ष के आदिवासी शुकरा के साथ किया जाता है। शादी के समय सोमा बात देती है कि पेट में तैय्यबचा का बच्चा है। शुकरा इसे स्वीकार करता है सोमा

एक लड़के को जन्म देती है। जिसका नाम मंगरा रखा जाता है तैय्यबचा को लगता है कि अपना बच्चा पाठशाला में जाये, पढ़ा-लिखा इंसान बने। मंगरा के आठ साल के होने पर इसका विवाह जवान स्त्री से होता है। एक दिन सोमा अपने पति को चोरी छुपे पतोहू के साथ अनैतिक संबंध बनाते देख लेती है और पति का खून करती है। अंत में सोमा तैय्यचचा से कहती है-"तुम बहुत चाहते थे न बेटा पढ़ लिख जाय, गांव में स्कूल कहाँ था? जेल में है। अब जेल में पढ़ लिखकर निकलेगा डरने की कोई बात नहीं है हाकिम, हिफाजत के लिए मैं भी तो यही हूँ न।""[25]

7.2 'जीवन के पार' में वधू-मूल्य प्रथा

जीवन के पार' कहानी में वधू मूल्य जैसी बर्बर प्रथा का वर्णन किया गया है। सिंहभूमि जिले के 'मुड़हुडा' गांव में गोनोंग नाम की बड़ी भंयकर दहेज प्रथा प्रचलित है। वधू का पिता अपनी प्रतिष्ठा के लिए अधिक वधू मूल्य वसूलना चाहता है। बेटी चाहे कुंवारी ही क्यों न मर जाए पर पिता बगैर वधू मूल्य के या कम वधू मूल्य में बेटी के हाथ पीले नहीं करते। पिता का स्वार्थ यह है कि अगर कमाऊ लड़की चली गई तो घर पशु और खेती कौन देखेगा इसीलिए वह विवाह के विरोध में रहता है। जात-बिरादरी के नियमों में पिता बहशी बन जाता है। बाप को यह रोग जात बिरादरी ने दिया है। मानसिंह और बामई खेल-खेलते हुए वधू मूल्य के समय पिता के रवैये को खेल द्वारा दर्शाते हैं। बानई बनी है पिता और मानसिंह बामई का हाथ मांग रहा है तब पिता कहता है-"हंह ये बैल! डीयंग के नशे में झूमते बामई के बाप की आंखे हिकारत से सिकुड़ जाती, एकरा से का होगा? गांव भर की चरवाही करके तू केतना जुगाड़ कर पाएगा मान? अरे, तनी अच्छा-अच्छा बैल और दस गो पाठा, आधामन चाउर चावल और पांच सौ रूपैया ले आ तब जाके बामई का हाथ मांग।/" स्पष्ट है कि बोंडा आदिवासियों में वधू मूल्य के अभाव में लड़कियाँ कुंवारी ही अधिक मरती है।[26]

7.3 'हिमरेखा' में बहुपति प्रथा

'हिमरेखा' कहानी में जानसार बाबर, चकरौता परिवेश में प्रचलित बहुपति प्रथा का वर्णन किया गया है। कहानी में नारी पहाड़ी संस्कृति की अनिष्ट परम्परा एवं रीति-रिवाजों में जिंदगी काटती है। द्रोपदी तथा पांच पाण्डवों की परिपाटी पहाड़ी संस्कृति में दिखाई देती है। पहाड़ी संस्कृति में बेटा एक हो या पांच, शादी केवल एक बेटे की होगी। आने वाली बहू चारों की पत्नी बनकर रहेगी। कहानी का नायक कपिल जब इलाहाबाद से शिक्षा ग्रहण करके घर जाता है तब पहाड़ी समाज बाध्य करता है कि वह माँ समान अपनी भाभी को उसके दूसरे पति का सुख प्रदान करे। कपिल यह बर्दाश्त नहीं कर पाता तो कपिल की भाभी उससे पहाड़ी संस्कृति तथा रीति-रिवाजों के खिलाफ कहती है-"हम तो बर्फ हैं, बर्फ ठंडे ठिठुरे हुए, जमकर पत्थर बन चुके हैं। जहाँ पड़े हैं, सालों साल पड़े रहेंगे? ... मैं तुम्हें आजाद करती हूँ।"[27]

7.4 अंधविश्वास और लोक-मान्यताएँ

अंधविश्वास युक्त मनगढ़ंत कहानियों का प्रभाव बोंडा आदिवासियों के जीवन को घेरे हुए है। "गुफा का आदमी' कहानी में बोंडा आदिवासी औरतें शरीर पर कम कपड़े पहनती है। इसका कारण पूछने पर सीता के शाप का उदाहरण देती है-"पूछने पर मालूम हुआ कि वहाँ एक सीताकुंड है जहाँ वनवास के दौरान एक दफा सीता जी नहा रही थीं। जेठ का महीना

था शायद कपड़े-वपड़े नहीं रहे होंगे बदन पर। उन्हें ऐसी सूरत में देखकर कुछ बोंडा लड़कियाँ हंस पड़ी। वो हंसी पहाड़ियों से टकराकर लौटी तो लगा, पहाड़ियाँ भी हंस रही हैं। बस खफा हो गई सीता जी, गुस्से में सराप दे डाला, "जाओ नंगी रहोगी' तब से लड़कियाँ भी नंगी हैं पहाड़ियाँ भी ।"/"[28]

आदिवासी समाज में विश्वास है कि टोना-टोटका करने से जीवन में सफलता मिलती है। महामारी कहानी में रंगई बहू को टोना-टोटका करने की आदत है। बिल्ली की खेड़ी घर में रखने से लखपति बनते हैं और बांझ औरत को लड़का होता है। लेखक लिखते हैं-"तब से रंगई बहू बिल्लियों की टोह में रहती है। ... किसी के गाभिन होने का आभास होता तो उन्हें दूध रोटी दे-देकर परकाया करती। ... भाग्य जगाने की कोशिश में कई-कई खेड़ियाँ जमा हो चली थी।| उसके पास |""[29]

7.5 आदिवासी लोककथाएँ

आदिवासी समाज की विभिन्न जातियों में भिन्न-भिनन्न लोक कथाएँ पाई जाती है। इन लोक कथाओं का प्रचार अधिकतर अनपढ़ तथा आदिवासी लोगों में होता है। दुनिया की सबसे हसीन औरत कहानी में उरॉव आदिवासी महिला अपने चेहरे पर तीन गोदने गोदवाती है। इनका मतलब कथानायक इन शब्दों में बताया है-"उरॉव मर्द सरहुल के पर्व में थे तब मुगलों का हमला होता है। औरतें मर्दाना पोशाक पहनकर मोर्चा संभालती है। तीन हमलों में मुगलों को शिकस्त देती है। गद्दार सुंदरी के चलते भेद खुल जाता है। चौथे हमले में बहादुर औरतों को पकड़कर तीन शिकस्त का बदला चेहरे पर तीन बार दाग कर लेना और फिर उन लोगों को कलक न मानकर सभी उरॉव औरतें सिंगार रूप में अपना लेती हैं|"[30]

7.6 आदिवासी लोकगीत और सांस्कृतिक जीवन

आदिवासियों के लोक गीतों में उत्सव, पर्व, सामूहिक नृत्य, गीत, प्रेम गीत, जागरण गीत, संथाली गीत के द्वारा संस्कृति के सभी आयामों के दर्शन होते हैं।

आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासी नारी हिंदिया मानवता के बारे में सोचते हुए सामूहिक नृत्य कर आदिवासी गीत गाती हैं-

"स्वरग राज केतिक संदर हमार लगिन सोना से सिंग रहौ, रूपा सजवार ले भूख नखे, पियास नखे, ओ ओ रे जोर नखे, जुलुस नखे, लड़ाई नखे, झगड़ों नखे, ओ हो रे।"'[31]

"जीवन के पार' कहानी में 'हो' आदिवासी मानसिंह प्रेम गीत गाता है-

"अमदोरादी चाती दाई अमरोरादी चीता दाई मरगंडा लेया लेयो कम बोरोया |"[32]

संजीव जी के कहानियों में आदिवासी समाज के सांस्कृतिक जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं का चित्रण दिखाई देता है। इनमें आदिवासी समाज की परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों आदि का सफल निरूपण हुआ है। यह चित्रण अपने आप में विविधता लिये हुए हैं।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 44-57

8. निष्कर्ष

संजीव जी की कहानियों में आदिवासी जीवन के यथार्थ विवेचन विश्लेषण के बाद कहा जा सकता है कि इनकी कहानियों का उद्देश्य जनजातीय जीवन की व्यथा और पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ शोषण के कारणों की व्याख्या एवं शोषण तंत्र का खुलासा करना है। इन कहानियों की संवेदना में जनजातीय वर्ग की समस्याओं, चिंताओं और उनकी मुक्ति की बेचैनी जुड़ी हुई है। इसी संवेदना को आधार बनाकर संजीव जी ने दर्जनों कहानियाँ लिखकर हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई है। यह बात स्पष्ट है कि संजीव जी ने जिस कथाओं पर शोध करके गहन चिंतन मनन के बाद समाज के सामने रखा है, उनमें संजीव जी की कहानीकार के रूप में अधिक चर्चा रही है, उतनी चर्चा उपन्यासकार के रूप में नहीं कहा सकता है।

1.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नारायण, इकबाल : भारतीय राजनीतिक विचारक ग्रंथ विकास, रायपुर : 2009, पृ. 12
2. भटनागर, डॉ. उषा : वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली : 2009, पृ. 122
3. महेंद्र, के.सी. : राजनीतिशास्त्र के सिद्धांत, धनपत राय प्रकाशन जालंधर, 1978, पृ. 56
4. काशिद, डॉ. गिरीश : कथाकार संजीव, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली : 2008, पृ. 49
5. संजीव : आप यहाँ हैं, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली : 1984, पृ. 43
6. संजीव : प्रेरणास्रोत व अन्य कहानियाँ, दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 1996, पृ. 89
7. संजीव : ब्लैक होल, दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 1977, पृ. 41
8. संजीव : आप यहाँ हैं, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली : 1984, पृ. 91
9. संजीव : खोज दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 2002, पृ. 64
10. संजीव : भूमिका व अन्य कहानियाँ, नवीन प्रकाशन, दिल्ली : 2003, पृ. 66
11. संजीव : प्रेरणास्रोत व अन्य कहानियाँ, दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 1996, पृ. 174
12. संजीव : खोज दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 2002, पृ. 56
13. संजीव : खोज दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 2002, पृ. 59
14. संजीव : खोज दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 2002, पृ. 117
15. संजीव : खोज दिशा प्रकाशन, दिल्ली : 2002, पृ. 85
16. संजीव : गुफा का आदमी, भारतीय ज्ञानपीठ, 2006, पृ. 11
17. संजीव : गुफा का आदमी, भारतीय ज्ञानपीठ, 2006, पृ. 22
18. विजय, लक्ष्मी : समकालीन हिन्दी उपन्यास : समय से साक्षात्कार, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2006, पृ. 63

19. सिंह, प्रेम : समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज, श्री नटराज प्रकाशन, 2009, पृ. 12
20. कालिया, रविन्द्र : नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली : नवम्बर अंक 2010, पृ. 34
21. संजीव : पांव तले की दूब, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर : 2005, पृ. 92
22. संजीव : पांव तले की दूब, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर : 2005, पृ. 122
23. संजीव : पांव तले की दूब, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर : 2005, पृ. 74
24. संजीव : किशनगढ़ की अहेरी, मीनाक्षी पुस्तक मंदिर, नई दिल्ली : 1981, पृ. 66
25. संजीव : सर्कस, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1984, पृ. 75
26. संजीव : धार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1984, पृ. 58
27. संजीव : धार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1984, पृ. 84
28. संजीव : रह गयी दिशाएँ इसी पार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 2011, पृ. 49
29. संजीव : रह गयी दिशाएँ इसी पार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 2011, पृ. 72
30. संजीव : रह गयी दिशाएँ इसी पार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 2011, पृ. 78
31. संजीव : जंगल जहाँ शुरू होता है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली : 2000, पृ. 110
32. संजीव : जंगल जहाँ शुरू होता है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली : 2000, पृ. 98